... का प्राणी का समायोजनशीलता अथवा अभियोजनशीलता का विज्ञान कहा ...

शिक्षा मनोविज्ञान क्या हैं? (*What is Educational Psychology ?*)

इस बात की व्याख्या हम पहले ही कर चुके हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान 'शिक्षा' तथा 'मनोविज्ञान' दो स्वतंत्र शब्दों के मेल से बना है। हम इन दोनों शब्दों की परिभाषा के सम्बन्ध में भी विचार कर चुके हैं। यहाँ यह देखना चाहेंगे कि शिक्षा मनोविज्ञान किसे कहते हैं।

यह तो स्पष्ट ही है कि शिक्षा से सम्बद्ध मनोविज्ञान को ही शिक्षा मनोविज्ञान कहते हैं। मनोविज्ञान की कई शाखाएँ (branches) हैं जिनमें शिक्षा मनोविज्ञान भी एक मुख्य शाखा है। इस शाखा का सम्बन्ध शैक्षिक-प्रक्रियाओं (educational processes) से है। इसी आधार पर विभिन्न मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों (educationists) ने शिक्षा मनोविज्ञान की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं—

स्कीनर (Skinner, 1990) के अनुसार, *''शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो सीखने सिखाने की प्रक्रिया का अध्ययन करती है।''*[2]

सौरेन्सन (Sorenson) ने शिक्षा-मनोविज्ञान के स्वरूप को और भी स्पष्ट करते हुए कहा है कि *''शिक्षा-मनोविज्ञान वह क्षेत्र है जो मनोविज्ञान का व्यवहार शैक्षिक-प्रक्रियाओं तथा विद्यालयीय विषयों के अध्यापन में करता है।''*[3]

इसी प्रकार **चैपलिन** (Chaplin, 1975) के शब्दों में, *''शिक्षा-मनोविज्ञान का तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अन्वेषण तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु औपचारिक विधियों के उपयोग से है।''*[4]

ए० एस० रेबर (A. S. Reber, 1995) ने शिक्षा-मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि *''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध शिक्षा में सिद्धान्तों तथा समस्याओं से है।''*[5]

इसी तरह **जॉन एफ० ट्रैवर्स** (John F. Travers, 1970) के अनुसार, *''शिक्षा-मनोविज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें छात्र, शिक्षण तथा अध्यापन का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है।''*[6]

---

1. "Psychology is concerned with over all adjustment of the organism to the environments." —N. L. Munn
2. "Educational Psychology is that branch of Psychology which deals with teaching and learning." —Skinner : *Essentials of Educational Psychology*
3. "Educational Psychology is the field having to do with applications of psychology to educative processes, such as teaching the school subjects," —H. Sorenson : *Psychology in Education.*
4. "Educational Psychology is the investigation of Psychological problems in the area of education and the application of formalized methods for solving these problems." —Chaplin
5. "Educational psychology is a sub-discipline of psychology concerned with theories and problems in education". —Reber, A. S., 1995
6. "Educational Psychology is best described as the systematic study of pupils, learning and teaching." —John F. Travers, 1970.

Rupashree Tanwar

Scanned by CamScanner

प्रस्तुत परिभाषाओं से शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप बहुत अंशों में स्पष्ट हो जाता है। फिर भी इन परिभाषाओं में कुछ त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती है। पहली बात यह कि इन परिभाषाओं से यही संकेत मिलता है कि शिक्षा-मनोविज्ञान का सम्बन्ध सीखने-सिखाने जैसी प्रक्रिया से ही है। शिक्षा के आधुनिक अर्थ की दृष्टि से यह विचार संकुचित (narrow) प्रतीत होता है। वस्तुतः देखा जाये तो शिक्षा और साक्षरता (literacy) को एक मानना ही भूल है। यह सही है कि साक्षरता शिक्षा का प्रमुख अंग है, परन्तु सब-कुछ नहीं। यदि यह सही नहीं तो अकबर को हम क्या कहें? कबीरदास को क्या मानें?—शिक्षित या अशिक्षित? यदि अशिक्षित माने तो किसे शिक्षित कहें? क्या उन्हें शिक्षित कहेंगे जो कहाँ थूकें, कहाँ शौच करें आदि साइनबोर्डों को पढ़ते हुए चलते है पर मनुष्यता के व्यापार की कोई झाँकी उनके व्यक्तित्व से नहीं मिलती? इस सम्बन्ध में **गाँधी जी** ने कहा है और खूब कहा है कि *''साक्षरता शिक्षा का न तो प्रारम्भ है और न अन्त। यह मात्र एक साधन है जिसके द्वारा स्त्री-पुरुष शिक्षित किए जा सकते हैं।''*[1]

दूसरी बात यह है कि इन परिभाषाओं में शिक्षा मनोविज्ञान का लक्ष्य (goal) भी स्पष्ट नहीं हो पाता है। प्रश्न है कि शिक्षा-मनोविज्ञान शैक्षिक प्रक्रियाओं का अध्ययन क्यों करता है? यह रहस्य (secret) इन परिभाषाओं से पूरी तरह नहीं खुल पाता है। इन त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मनोविज्ञान की समग्र (comprehensive) तथा संतोषप्रद परिभाषा यह दी जा सकती है—*''शिक्षा मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान का एक रूप है जो मापन-विधियों, विश्लेषण तथा निरीक्षण द्वारा व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को निर्धारित करता है और प्राप्त अनुसंधानों के आधार पर व्यक्ति की समुचित शिक्षा के लिए संकेत और सलाह देता है।''*[2] इस परिभाषा से शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप, उसका व्यापक क्षेत्र तथा उसका लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप
(Nature of Educational Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाओं के विश्लेषण से इसका स्वरूप स्पष्ट होता है। इसके स्वरूप या विशेषताओं (features) को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यवहारपरक विज्ञान है *(Educational Psychology is an applied science)*—मनोविज्ञान के दो मुख्य प्रकार हैं—(i) सैद्धान्तिक मनोविज्ञान (theoritical psychology) तथा (ii) व्यावहारिक मनोविज्ञान (applied psychology)। सैद्धान्तिक मनोविज्ञान का अर्थ मनोविज्ञान की उस शाखा से है जो व्यक्ति और जीवों के अनुभव एवं व्यवहार का अध्ययन करके सामान्य नियमों का निर्माण करता है। सामान्य मनोविज्ञान (general psychology), असामान्य मनोविज्ञान (abnormal psychology), बाल-मनोविज्ञान (child psychology), आदि की गणना इसी शाखा में होती है। दूसरी

Scanned by CamScanner

और, व्यावहारिक मनोविज्ञान उस शाखा को कहते है जो सैद्धान्तिक मनोविज्ञान द्वारा बनाए गए नियमों का उपयोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यावहारिक सफलता या उपयोगिता के लिए करती है। शिक्षा मनोविज्ञान, औद्योगिक मनोविज्ञान (industrial psychology), आदि की गणना इसी शाखा के अन्तर्गत होती है। स्पष्टतः शिक्षा-मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान की शाखा है। कारण यह कि यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में करके शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करता है।

2. शिक्षा मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान है *(Educational psychology is positive science)*—विज्ञान के मुख्य दो प्रकार हैं जिन्हें समर्थक विज्ञान (positive science) तथा आदर्श-सूचक विज्ञान (normative science) कहते है। समर्थक विज्ञान उस विज्ञान को कहते है, जो किसी विषय का अध्ययन उसी रूप में करता है, जिस रूप में वह होता है। इसके विपरीत आदर्श-सूचक विज्ञान उस विज्ञान को कहते है, जो किसी विषय का अध्ययन उस रूप में करता है, जिस रूप में उसे होना चाहिए। शिक्षा-मनोविज्ञान वास्तव में किसी विषय का अध्ययन उसी रूप में करता है, जिस रूप में वह होता है। अतः यह एक समर्थक विज्ञान है। अपने इस स्वरूप के कारण यह विज्ञान वास्तव में भौतिकी (physics), रसायनशास्त्र (chemistry) आदि की श्रेणी में आता है। इस आधार पर यह दर्शनशास्त्र (philosophy), नैतिकशास्त्र (ethics) आदि आदर्श-सूचक विज्ञान से भिन्न है।

3. शिक्षा मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है *(Educational psychology is a social science)*—शिक्षा मनोविज्ञान का स्वरूप कुछ ऐसा है कि इसकी गणना आजकल समान विज्ञान के रूप में भी होने लगी है। समाज विज्ञान (sociology) तथा मानव विज्ञान (anthropology) की तरह शिक्षा-मनोविज्ञान भी मानव का अध्ययन करता है तथा बालक के समाजीकरण (socialization) के विभिन्न पक्षों का आकलन करता तथा उसको उन्नत बनाने के उपायों (measures) का उल्लेख करता है।

4. शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास से है *(Educational psychology is concerned with mental development of the child)*—शिक्षा-मनोविज्ञान मानव के मानसिक विकास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। बौद्धिक विकास, अभिवृत्ति विकास, आदि के समुचित विकास के लिए शिक्षा मनोवैज्ञानिक अनुकूल उपायों का सुझाव देते हैं।

5. शिक्षा मनोविज्ञान बालक के शारीरिक विकास से सम्बन्ध रखता है *(Educational psychology is concerned with physical growth of the child)*—शिक्षा मनोविज्ञान मानव के शारीरिक विकास का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। बालकों के शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले करकों पर यह विज्ञान प्रकाश डालता है तथा इसके समुचित-विकास का सुझाव देता है।

6. शिक्षा मनोविज्ञान बालक के सामाजिक विकास से सम्बन्ध रखता है *(Educational psychology is concerned with social development of the child)*—शिक्षा मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मानव के सामाजिक विकास का अध्ययन करता है। बच्चे सामाजिक या असामाजिक क्यों और कैसे बन जाते है, उन्हें सामाजिक मानव (social being) कैसे बनाया जा सकता है, इन सारी बातों का अध्ययन यह मनोविज्ञान करता है।

Scanned by CamScanner

7. शिक्षा मनोविज्ञान बालक के संवेगात्मक विकास से सम्बन्ध रखता है *(Educational psychology is concerned with emotional development of the child)*—शिक्षा मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो मानव के संवेगात्मक विकास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है। शिक्षा-मनोवैज्ञानिक संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाली कारकों को निर्धारित करता है, तथा संवेगों के समुचित विकास के उपायों (measures) का सुझाव देता है।

8. शिक्षा मनोविज्ञान बालक के नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास से सम्बन्ध रखता है *(Educational psychology is concerned with moral and spiritual development)*—शिक्षा-मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो मानव के नैतिक तथा अध्यात्मिक विकास का अध्ययन करता है तथा इसके समुचित विकास का मार्गदर्शन भी करता है। महात्मा गाँधी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि बालकों में नैतिकता तथा अध्यात्मिकता को विकसित करना शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों का एक मुख्य दायित्व है।

9. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण तथा अध्यापन का विज्ञान है *(Educational psychology is the science of learning and teaching)*—जैसा कि स्किनर (Skinner, 1990) ने दावा किया है, शिक्षा-मनोविज्ञान में शिक्षण तथा अध्यापन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाता है। सीखने के अर्थ, इसके प्रकार, इसके सिद्धान्त, प्रभावशाली शिक्षण (effective learning) के निर्धारक आदि का अध्ययन यह मनोविज्ञान करता है। इसी प्रकार अध्यापन के विभिन्न पहलुओं का यह अध्ययन किया जाता है तथा सफल अध्यापन के उपायों का सुझाव दिया जाता है।

10. शिक्षा मनोविज्ञान एक बढ़ता हुआ विज्ञान है *(Educational psychology is a growing science)*—शिक्षा-मनोविज्ञान वास्तव में एक ऐसा विज्ञान है, जिसका क्षेत्र निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसका सम्बन्ध नये शोधों से है। इसके क्षेत्र के अन्तर्गत लगातार नये-नये शोध हो रहे हैं और जैसे-जैसे शोधों के परिणाम (findings) उपलब्ध होते जा रहे है, शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों की सूझ बालक के स्वरूप को समझने में बढ़ती जा रही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा-मनोविज्ञान का स्वरूप काफी व्यापक तथा जटिल है।

शिक्षा के उद्देश्य
(Aims and Objectives of Education)

शिक्षा क्या है? इसकी चर्चा पहले ही हम कर चुके हैं। यहाँ हम शिक्षा के उद्देश्य के सम्बन्ध में विचार करना चाहेंगे, जिससे शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्य एवं सार्थकता को सिद्ध करने में हम समर्थ हो सकें। शिक्षा वस्तुतः मनुष्य के जीवन-व्यापार में सफल होने की सामर्थ्य प्रदान करने की एक सात्विक प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति समाज का उपयोगी प्राणी बन सके। इसी पृष्ठभूमि में इसके उद्देश्यों का निर्धारण भी होता है। जैसे-जैसे युग-विशेष की सामाजिक एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ परिवर्तित होती हैं, वैसे-वैसे शिक्षा के उद्देश्यों में भी हम परिवर्तन पाते है।

प्राचीन भारतीय जीवन दर्शन के अनुसार धर्म, अर्थ काम और मोक्ष सफल जीवन के चार चरण निर्धारित हुए थे, जिसके संदर्भ में शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष प्रदान करना था। वैदिक काल के बाद ही शिक्षा धर्मप्रधान हो चली और मुसलमानों के पदार्पण के बाद भी धर्म के निर्धारित दस लक्षणों में जीवन को नियोजित करना ही शिक्षा का उद्देश्य रहा। लेकिन, अंग्रेजों के पदार्पण के बाद शिक्षा के उद्देश्य-निर्धारण में हम परिवर्तन पाते हैं। यूरोपीय भौतिकवादी

Scanned by CamScanner

विकसित करना तथा सहकारी समूह-व्यवहार की ओर उसे उत्प्रेरित करना है।''[1]

V

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य

(Aims and Objectives of Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्यों की मंजिल से हम परिचित हो चुके हैं। यहाँ शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्यों से हम परिचित होना चाहेंगे। मूलतः देखा जाये तो जो उद्देश्य शिक्षा के है, उन्हीं उद्देश्यों की सम्यक पूर्ति की दिशा में मनोविज्ञान अपनी पूरी शक्तियों के साथ सक्रिया दिखता है। शिक्षा-मनोविज्ञान के चार मूल आधार तत्त्व है—(i) शिक्षा मनोविज्ञान मूलतः विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं से सम्बद्ध होगा, (ii) शिक्षा मनोविज्ञान प्रधानतः सम्यक अनुसंधानों पर आधारित होगा, (iii) शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहारों के साथ सम्यक न्याय करने में समर्थ होगा और (iv) शिक्षा मनोविज्ञान के विवरण स्पष्ट तथा सहज ग्राह्य होंगे। इन आधार-तत्त्वों तथा शिक्षा के उद्देश्यों के संदर्भ में शिक्षा मनोविज्ञान के निम्नांकित उद्देश्य हैं।

1. अध्यापक की सहायता करना (*To help the teacher*)—शिक्षा-मनोविज्ञान का एक प्रधान उद्देश्य शिक्षण को सफल बनाने में शिक्षक की सहायता करना है। औपचारिक शिक्षा (formal education) का सीधा सम्बन्ध विद्यालय से है जिसके संचालन का दायित्व शिक्षक के ऊपर है। बाल-केन्द्रित शिक्षा की चेतनशील गाड़ी का चालक शिक्षक ही है। किसी भी गाड़ी का चालक तब तक कुशल चालक नहीं कहा जा सकता जब तक उस गाड़ी के कल-पुर्जो के संगठन तथा उन गड़बड़ी को दूर करने के उपायों से वह अवगत न हो। इसी तरह कोई भी शिक्षक तब तक सफल शिक्षक नहीं कहा जा सकता जब तक कि वह अपने विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता, अभिरुचि, मनोवृत्ति तथा उनकी व्यक्तिगत कमजोरियों से अवगत न हो। गाड़ी की इंजन तो जड़ है। परन्तु विद्यालय की इंजन चेतन है। अतः गाड़ी के चालक की तुलना में विद्यालय के चालक का दायित्व कई गुणा अधिक है और कठिन भी। अतः शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य शिक्षक को इस योग्य बना देना है कि वह अपने इस दायित्व को सही तौर पर निभा सके। इस संदर्भ में शिक्षक सम्बन्धी शिक्षा-मनोविज्ञान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

(i) शिक्षक को बालकों की मानसिक योग्यताओं को समझने तथा तदनुसार शिक्षा की व्यवस्था करने में सहायता देना।

(ii) शिक्षक को बालकों की अभिरुन्नि तथा मनोवृत्ति की जानकारी दिलाना और अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था में मदद करना।

(iii) बालकों के व्यवहारों तथा उपलब्धियों (achievements) को बिना भेद-भाव के देखने और उनके साथ निष्पक्ष सहानुभूतिपूर्वक (sympathetic) व्यवहार करने में शिक्षक की सहायता करना।

---

1. "Modern education aims at giving the learner mastery of facts, skills and ideas, developing his problem solving methods, involving him in co-operative group behavior, and furthering his all round personal development."
—*Psychology in Education* : Sorenson

Rupashree Jamuar

Scanned by CamScanner

(iv) विद्यार्थियों की कमजोरियों तथा असफलताओं को समझने तथा उनके उपचार की दिशा में शिक्षक का मार्ग-दर्शन करना।

(v) शिक्षक को अपनी सीमाओं (limitations) को समझने तथा उन्हें स्वीकार कर कदम उठाने में सहायक होना।

(vi) शिक्षक को इस योग्य बनने में मदद करना कि वह अपने अध्यापन (teaching) को सहज एवं आनन्ददायक बना सके।

(vii) उपयुक्त शिक्षक-विधि को अपनाने में शिक्षक की सहायता करना।

(viii) शिक्षक को इस योग्य बनने में सहायता करना कि वह स्वयं शिक्षा में समाजीकरण के महत्त्व को समझ सके और अपने विद्यार्थियों को इस ओर उत्प्रेरित कर सके।

2. उचित अध्यापन विधि प्रस्तुत करना *(To provide proper teaching method)*—शिक्षा की सफलता बहुत अंशों में अध्यापन-विधि पर निर्भर करती है। इसीलिए, शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य है उचित शिक्षण-विधि को प्रस्तुत करना। शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों के सक्रिय प्रयास से आज विविध प्रकार की शिक्षण-विधियाँ उपलब्ध हैं। जैसे सुगम से जटिल की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर, आगमन-विधि (deductive method), निगमन-विधि (inductive method) इत्यादि। अतः शिक्षा-मनोविज्ञान इस बात की खोज करना चाहता है कि इन विधियों में कौन-सी विधि किस परिस्थिति में अधिक उपयोगी प्रमाणित होगी।

3. उचित पाठ्यक्रम प्रस्तुत करना *(To provide proper curriculum)*—शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य बालकों की मानसिक तथा शारीरिक तत्परता (readiness), व्यक्तिगत आवश्यकता तथा सामाजिक आकांक्षा के अनुकूल पाठ्यक्रम प्रस्तुत करना है। पाठ्यक्रम की रचना करते समय विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता के साथ-साथ अभिरुचि तथा मनोवृत्ति को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

4. शैक्षिक निर्देशन देना *(To impart educational guidance)*—शिक्षार्थियों को शिक्षा-सम्बन्धी निर्देशन देना भी शिक्षा-मनोविज्ञान का एक मुख्य लक्ष्य है। बालकों की मानसिक योग्यता, अभिरुचि, रुझान आदि शीलगुणों में वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं। अतः उनकी शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब शिक्षा की व्यवस्था उनकी मानसिक योग्यता, अभिरुचि आदि के अनुकूल हो। इसीलिए, शिक्षा-मनोविज्ञान उन्हें सही दिशा में निर्देशन देना चाहता है कि उन्हें कला, संगीत, विज्ञान, वाणिज्य आदि विषयों में से किस विषय की शिक्षा लेनी चाहिए ताकि वे शैक्षिक अभियोजन (adjustment) प्राप्त कर अपने तथा अपने समाज के लिए उपयोगी प्रमाणित हो सकें।

5. व्यावसायिक निर्देशन देना *(To impart vocational guidance)*—शिक्षा-मनोविज्ञान का लक्ष्य विद्यार्थियों को व्यावसायिक निर्देशन देना भी है। जिस प्रकार सभी व्यक्तियों के लिए सभी कार्य या व्यवसाय उचित नहीं होते, उसी तरह सभी व्यवसाय के लिए सभी व्यक्ति उपयुक्त नहीं होते। अतः कार्य-सन्तुष्टि (job satisfaction) प्राप्त करने हेतु, उचित व्यवसाय के लिए उचित व्यक्ति का चुनाव आवश्यक है।[1] इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा-मनोविज्ञान बालकों को उचित व्यवसाय का निर्देशन देता है।

6. शारीरिक शिक्षा देना *(To impart physical education)*—बच्चों को मानसिक

---

1. "Right man for a right job."

Scanned by CamScanner

स्वास्थ्य के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करना भी शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य है। कारण यह कि बिना शारीरिक स्वास्थ्य के न तो वे मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते है और न समुचित ढंग से उनकी शिक्षा की सम्भव हो सकती है। जिस बालक को एडोनाइड (adonoid) की शिकायत रहती है उसका मस्तिष्क शिथिल हो जाता है। जो बालक काफी दूरी तय करके विद्यालय आते हैं वे थकान के कारण कक्षा में ऊँघते रहते हैं। कहने का अर्थ यह है कि समुचित शिक्षा के लिए शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना जरूरी है। बालकों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी शारीरिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। कारण यह कि यदि विद्यालय का चालक (शिक्षक) स्वयं रोगग्रस्त हो तो वह चेतन-इंजन (बालक) को किस कुशलता के साथ चला सकेगा, यह तो स्पष्ट ही है।

7. मूल्यांकन की उचित विधि प्रस्तुत करना *(To provide proper method of evaluation)*—शिक्षा-मनोविज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यताओं के साथ-साथ शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन करना तथा तद्नुसार शिक्षा-व्यवस्था में सहायता करना है। इसके लिए शिक्षा-मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार की विधियों के गुणों तथा अवगुणों को प्रस्तुत कर अनुकूल विधि के उपयोग की सलाह देता है। कारण यह कि बिना अनुकूल तथा उचित विधि के शैक्षिक उपलब्धियों का सही ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता और इसके बिना बालकों की शिक्षा की सही व्यवस्था नहीं की जा सकती।

8. अधिकारियों का मार्गदर्शन करना *(To guide the administrators)*—शिक्षा-मनोविज्ञान का एक उद्देश्य यह भी है कि यह विद्यालय से सम्बद्ध अधिकारियों की शैक्षणिक परिस्थितियों के संगठन (organization) तथा निरीक्षण (supervision) में सहायता देता है। शिक्षा की सफलता के लिए शैक्षिक वातावरण का अनुकूल तथा प्राकृतिक (natural) होना अतिआवश्यक है। शैक्षिक वातावरण के अन्तर्गत औपचारिक वातावरण की गणना होती है। अतः शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य इन दोनों प्रकार के वातावरण को समुचित बनाने में अधिकारियों की सहायता करना है।

9. अभिभावकों का मार्ग-दर्शन करना *(To guide the guardians)*—बालकों की शिक्षा की सफलता बहुत अंशों में उनके अभिभावकों पर भी निर्भर करती है। अभिभावक को अपने बालक की मानसिक योग्यता, अभिरुचि तथा रुझान का ज्ञान होना चाहिए तथा वे तद्नुसार शिक्षा की व्यवस्था में शिक्षक की सलाह पर अलम कर सकें। उन्हें अपने बालक की शैक्षिक उपलब्धि तथा प्रगति का भी ज्ञान होते रहना चाहिए। उनकी मानसिक तथा शारीरिक कमजोरियों से भी उन्हें अवगत होना चाहिए। अतः शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य अभिभावकों को इन सभी बातों को समझने तथा उनपर अमल करने की दिशा में निर्देशन देना तथा सहायता करना है।

10. सर्वांगीण व्यक्तित्व को विकसित करना *(To develop wholesome personality)*—शिक्षा-मनोविज्ञान के उपर्युक्त विविध उद्देश्यों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि इसका प्रधान उद्देश्य सर्वांगीण व्यक्तित्व को विकसित करना है। मानसिक, शारीरिक तथा नैतिक पक्षों के अनुरूप विकास के बाद ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है जो व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए हितकर होता है। **स्किनर** (Skinner, 1990) ने कहा है, *''शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य शैक्षिक परिस्थिति के मूल्य एवं कुशलता में योगदान देना है।''*[1] अतएव, शिक्षा-मनोविज्ञान विद्यार्थियों के ऐसे ही व्यक्तित्व के निर्माण की कामना करता है तथा आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन करता है।

1. "The primary aim of educational psychology is to contribute to the value and efficiency of learning situation." —Skinner, 1990

Rupashree Jamuar

Scanned by CamScanner

VIII

11. राष्ट्र को प्रतियोगी तथा सक्रिय बनाना *(To make the nation competitive and alive)*—**स्लेबीन** (Slavin, 1991) ने कहा है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र को प्रतियोगी तथा सक्रिय बनाना है। उन्होंने राष्ट्रपति **बुश** (President Bush) का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बुश ने अपने आपको शिक्षा राष्ट्रपति (The education president) की संज्ञा देना और 2000 तक शैक्षिक लक्ष्यों के एक महत्वाकांक्षी का अनुमोदन किया। वर्तमान समय में राष्ट्र को सक्षम बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि सूचना टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर आदि क्षेत्रों में राष्ट्र में अधिक-से-अधिक विकसित हो सके। इसके लिए प्राथमिक स्तर से बालकों को इस क्षेत्र में अनुकूल शिक्षा देना आवश्यक है।

शिक्षा मनोविज्ञान के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या हम कर चुके है। यहाँ हम उन पर एक समीक्षात्मक दृष्टि डालना चाहते है कि विशेष रूप से भारतवर्ष में इन उद्देश्यों पर कहाँ तक अमल किया गया है या किया जा रहा है। इसमें संदेह नहीं कि भारतीय शिक्षा-प्रणाली में शिक्षा-मनोविज्ञान के उद्देश्यों की पृष्ठभूमि में एक बड़ी क्रान्ति आ गई है। नामांकन (admission) के आधार, पाठ्य-क्रम के स्वरूप, शिक्षण-विधि तथा शैक्षणिक वातावरण में थोड़ा-बहुत परिवर्तन हुआ है। परन्तु शिक्षण मनोविज्ञान के बहुत सारे उद्देश्य अभी तक सिद्धान्त के रूप में ही मौन पड़े हैं। सच तो यह है कि मनोविज्ञान के अधिकांश उद्देश्य शिक्षा-जगत् के प्रदर्शन के ही आधार बन कर रह गये हैं। प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था के अन्दर श्रम का महत्त्व तथा कार्य का दायित्व ही बिल्कुल क्षीण हो चला था।

लेकिन, वर्तमान समय में भारत सरकार भी शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हो चली है। विभिन्न सरकारी संगठनों तथा गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से शिक्षा-मनोविज्ञान के उपर्युक्त उद्देश्यों को पूरा करने के प्रयास जारी हैं।

शिक्षा तथा शिक्षा मनोविज्ञान में अन्तर
(Differences between Education and Educational Psychology)

शिक्षा (Education) तथा शिक्षा-मनोविज्ञान (Educational Psychology) के अर्थ, स्वरूप तथा उद्देश्यों की चर्चा ऊपर की जा चुकी है, जिससे यह स्पष्ट हो चुका है कि इन दोनों के बीच गहरा सम्बन्ध है। शिक्षा-मनोविज्ञान तथा शिक्षा में घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी निम्नलिखित अन्तर हैं:—

(1) शिक्षा तथा शिक्षा-मनोविज्ञान के बीच पहला अन्तर इसके अर्थ (meaning) के दृष्टिकोण से है। दोनों दो भिन्न संप्रत्यय (concepts) हैं। शिक्षा का अर्थ वह प्रगतिशील प्रक्रिया (progressive process) है, जो किसी व्यक्ति की मनोदैहिक क्षमताओं (psychophysical capacities) के विकास में सहायक होती है। दूसरी ओर शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यवहारपरक विज्ञान (applied science) है जो व्यक्ति की मनोदैहिक क्षमताओं के समुचित विकास के लिए अनुकूल शैक्षिक व्यवस्था का सुझाव (suggestion) तथा मार्गदर्शन (guideline) देता है।

(2) शिक्षा तथा शिक्षा-मनोविज्ञान के बीच दूसरा अन्तर उद्देश्य (objectives) से संबंधित है। शिक्षा का परम् उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास (all round development) है। इसका तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, संवेदी क्रियात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक, भौतिक एवं अध्यात्मिक आदि विकासों से है। दूसरी ओर शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए मार्गदर्शन करना तथा उपयुक्त वातावरण का सुझाव देना है।

Scanned by CamScanner